

kommen: एतत्पत्ता न याति न चेज्यया निर्वपणाद्गृह्णाद्वा BHĀG. P. 5,12,12. — 5) *verfahren, sich benehmen*: नैवमन्याः स्त्रियो याति MBH. 4,77. — 6) *gehen —, kommen —, sich begeben —, fahren —, reisen —, gelangen zu, nach, in; marschieren gegen; die Ergänzung oder nähere Bestimmung a) im acc.*: कं याथ RV. 1,39,1. यौ वै ह्यरादनसा रथेन 3,33,9. वृत्तिः 7,40,5. स प्रीतो याति वार्यम् 5,6,3. 81,4. सोमपेयम् 6,40,4. 7,28,2. यातिम् VALAKH. 5,8. AV. 2,12,7. — कुण्डिनम् MBH. 3,2290. 2293. 2714. विदर्भी यातुमिच्छामि दमयत्याः स्वयंवरम् 2772. 2827. fg. 3,3023. 5,5977. 7099. 12,6352 (med.). HARIV. 7396 (med.). R. 1,1,85. 2,5,21. 34,35. 30,1,5,89,27 (med.). अहं यास्ये रणागिरम् 6,34,16. संकेतम् AK. 2,6,4,10. पतिगृहम् ÇĀK. 84. MEGH. 34. Spr. 4406. 4544. KATHĀS. 18,80. 40,89. तीर्थानि 52,239. BHĀG. P. 5,13,1. MĀRK. P. 109,30 (act. und med.). PĀNĀK. 4,2,75. द्वारका याताः HARIV. 8929. Spr. 2462. BHĀG. P. 6,1,58. प्रवृत्तौ न सः — पारमन्वुनिधेयौ KATHĀS. 18,306. यास्ये परं पारं महोदधेः R. 5,1,83. VARĀH. BRH. S. 104,60. दिवम् M. 11,240. R. 1,53,18. 58,18. 60,24. त्रिदिवम् M. 9,253. R. 7,30,48 (med.). यास्ये त्रिविष्टपम् BHĀG. P. 4,12,31. स्वर्गम् M. 7,89. स्वः 53. नरकम् 3,172. 249. 4,87. रमातलम्, भुवम् BHĀG. P. 9,9,4. 5. 10,49,19 (med.). सर्वतोदिशम् MBH. 3,2658. शिरसा च महौ यौ so v. a. *verneigte sich bis zur Erde* R. 1,9,67 (65 GORR.). पदि ते याम मूर्धभिः HARIV. 4814. नदी मगधान्यौ R. 1,34,9. यात्वे यमुना पूर्णा समुद्रम् Spr. 3426. इयमेकपदी याति मम तं पितुराश्रमम् R. GORR. 2,63,40. अतिकं मानुः KATHĀS. 18,223. यो यो योनिम् M. 12,53. BHĀG. P. 6,17,15. 7,1,37. दृष्टियम् *zu Gesicht kommen* VARĀH. BRH. S. 54,20. लोचनपथम् Spr. 1246. अदर्शनपथम् *unsichtbar werden* MBH. 3,1744. दृग्गोचरम् RĀGA-TAR. 6,320. कर्तुर्न याति गोचरम् Spr. 3346. अगोचरं नयन्तोः *den Augen entschwinden* VIKR. 72. यायादरिपुरम् *marschire gegen* M. 7,181. 185. विषयं परस्य KĀM. NĪTIS. 13,4. परम् *gegen den Feind* I. 11,3. 10. तामेव याहि प्रियाम् *gehe zu* Spr. 688. H. 529. हरिम् BHĀG. P. 5,12,6. 5,9. कासल्या शरणं यामः R. 2,78,15. 3,55,48. BHĀG. P. 9,7,7. MBH. 3,2845. शत्रुकुस्तम् *in die Hand des Feindes gerathen* BHĀT. 5,60. कर्णौ *zu Ohren kommen* Spr. 4007. *auf Jmd stossen* 3852. *von der Bewegung der Gestirne nach einer best. Richtung hin*: सन्नादत्तम् — यात्सु चित्रशिखण्डेषु RĀGA-TAR. 1,55. अस्तं यात्यादित्ये ĀCV. GRH. 2,6,14. M. 4,37. VARĀH. BRH. S. 39,4. यात्यस्तशिखरं पतिरोपधीनाम् ÇĀK. 77. क्षिप्रकरे याते स्वाणुदिशम् VARĀH. BRH. S. 24,33. 28,1. 104,36. 43. दहनर्तयात् *stehend in* 10,19. — अस्तम् *an's Ende zu stehen kommen* RV. PRĀT. 12,1. *zu Ende kommen* ÇĀK. 139, v. l. RAGH. 3,21. यायाय त्वं द्वियामत्तं भूयो यातासि चासकत् so v. a. *fertig werden mit* BHĀT. 9,47. — b) *im loc.*: पुनरेव याहि राज्ञः सकाशे R. 2,52,12. याता गङ्गायाम् BHĀG. P. 9,16,2. वृत्ते VER. in LA. (III) 4,4. कीर्तिश्च ते ऽतुला व्रत्स त्रिषु लोकेषु यास्यति MBH. 13,1937. तस्यो तस्य — च मनो यौ KATHĀS. 32,148. चक्रं करे यातम् *in die Hand gelangt* HARIV. 8905. तत्र MBH. 1,6194. 4,444. R. 1,33,6. अन्यत्र KATHĀS. 52,232. क्व MBH. 3,2240. 2530. प्रिया नान्या त्वतो मे ऽस्तीति यद्धि माम् । त्वमवोचः क्व तद्यातम् so v. a. *was ist daraus geworden? wie steht es damit?* HARIV. 7121. — c) *im dat.*: ययतुः स्वनिवेशोपेभे वले KATHĀS. 47,92. न देवाय न विप्राय न वन्धुभ्यो न चात्मने । कृपास्य धनं याति so v. a. *zu Gute kommen* Spr. 1399. फलेभ्यः *nach Früchten gehen* P. 2,3,14, Sch. रामलक्ष्मणानाशाय

*zum Verderben von* R. 3,56,23. कुशेध्माकरणाय RAGH. 14,70. तपसे *um sich zu kasteien* R. 1,46,7. — d) *im acc. mit प्रति*: दोलेव मुङ्करयाति याति चैव सभा प्रति MBH. 3,2359. अयं स रथ यायाति यो ऽयासोत्पाण्डवान्प्रति 5,1803. KATHĀS. 24,252. तदा यायाद्विपुं प्रति M. 7,171. — e) *im infin.*: कृत्तं द्रष्टुम् VOP. 26,200. विगाहितुं यामुनमन्वु BHĀT. 3,39. daneben noch ein acc. des Ortes: उद्यानानि — सायाङ्गे क्रीडितुं याति कुमार्यः Spr. 4406. RĀGA-TAR. 5,48. 6,186. BHĀT. 7,53. — 7) *an eine Beschäftigung gehen, in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen, — gerathen; theilhaft werden, erlangen; mit acc.*: सर्गव्यापारम् KUMĀRAS. 2,54. मृगयाम् R. 4,17,18. BHĀG. P. 9,20,6. अन्वयो दशाम् PĀNĀK. 70,5. अमरमिथुनप्रतप्तपीयामवस्थाम् MEGH. 18. वशम् *in die Gewalt Jm's (gen.) kommen* R. 3,62,14. VARĀH. BRH. S. 34,17. प्रकृतिम् *zu seiner Natur zurückkehren* Spr. 3144. MBH. 3,8826. निद्राम् *einschlafen* Spr. 2475. KATHĀS. 12,109. 18,191. स्वयाम् BHĀG. P. 10,31,23. निधनम् *den Tod finden* Spr. 3310. VARĀH. BRH. S. 24,33. विक्रियाम् Spr. 3266. दर्शनम् *sichtbar werden* VARĀH. BRH. S. 11,42. 38,1. BHĀG. P. 1,6,34. घालोकम् *dass.* VARĀH. BRH. S. 47,10. गर्कषाम् M. 2,80. संसर्गम् 11,181. संपर्कम् VIKR. 13. उदयम् *aufgehen* (von Gestirnen) VARĀH. BRH. S. 8,27. 11,17. विस्मयम् MBH. 3,2795. R. 1,2,1. मोक्षम् BHĀG. 4,35. प्रसादम् PĀNĀK. 67,8. प्रबोधम् 37,20. विवादम् KATHĀS. 52,209. उपतापम् VARĀH. BRH. S. 10,12. 14. पाकम् 32,23. संप्रयोगम् 78,25. खेदम् RĀGA-TAR. 4,691. परिभ्रमम् Spr. 4871. तपम् MBH. 3,8840. R. 1,64,20. 3,62,14. VARĀH. BRH. S. 10,11. 14,32. 46,78. 93,2. KATHĀS. 18,269. विनाशम् R. 2,44,13. विलयम् Spr. 1371. संस्थितिम् M. 6,90. घ्यातिम् MBH. 3,8273. निर्वृतिम् R. 3,71,7. समुन्नतिम् Spr. 3107. निष्पत्तिम् VARĀH. BRH. S. 8,13. प्रौढिम् KATHĀS. 14,63. तृप्तिम् MĀRK. P. 61,30. वृद्धिम् VOP. 2,11. VARĀH. BRH. S. 4,32. हृत्यम् *Botendienst thun* RV. 1,74,7. 6,58,3. 7,9,5. काठिन्यम् VARĀH. BRH. S. 21,34. कालुष्यम् KATHĀS. 19,95. लाघवम् BHĀG. 2,35. ÇAUT. (BR.) 4. उदात्तश्रुतिताम् RV. PRĀT. 3,11. अकुलताम् M. 3,63. 5,35. 50. 11,25. 12,9. 40. 68. 70. MBH. 3,3066. 5,7148. R. GORR. 2,33,24. 3,61,44. RT. 1,2. 9. MEGH. 94. RAGH. 3,26. 5,71. 9,32. 12,11. Spr. 689. 1979. 2042, v. l. 2795. VARĀH. BRH. S. 5,1. 12,17. 42,10. 73,4. 78,20. 79,39. 104,57. KATHĀS. 18,262. 53,35. RĀGA-TAR. 3,318. 6,180. PRAB. 70,3. यास्यत्याख्यां भरत इति ÇĀK. 192. स्थानध्वंशम् Spr. 2807. अन्यत् (so die v. l.) ÇVETĀCV. UP. 6,4. अकृतोभयम् BHĀG. P. 1,12,28. यो ऽस्यविद्यामयान्नलात् *empfangen —, lernen von* 9,9,17. उत्सवाडुत्सवम् *ein Fest nach dem andern erleben* KATHĀS. 39,218. — 8) *inire* (feminam), *mit acc.*: स्त्रियम् MBH. 13,4518. अत्मतनयो प्रजानाथो ऽयासीत् PRAB. 8,3. — 9) *angehen, anstehen; mit dopp. acc.* RV. 1,24,11. 58,7. तदौ यामि द्रविणाम् 5,54,15. भगमनुभ्रौ अर्थं याति रत्नम् 7,38,7. 8,3,9. 27,1. यद्वा यामि दृद्धि तन्नः 10,47,8. 8,30,6. 62,6. — 10) *hinter Etwas kommen, erkennen*: तथास्य चित्तं ह्यपि संवित्कर्मवरुर्भस्यास्य न यामि तत्त्वतः MBH. 4,234. — 11) यातु so v. a. *dem sei wie ihm wolle* HIT. 101,18. 128,9. — 12) यात fehlerhaft für जात in यातमन्यु MBH. 13,509. जात° ed. Bomb. — Vgl. 3. इ und जम्.

— *caus.* यापयति 1) *Jmd gehen heissen, aufbrechen lassen, entlassen* BHĀG. P. 10,58,52. 84,68. *zu einem Marsche veranlassen* KĀM. NĪTIS. 11,25. दृष्टिम् *den Blick gehen lassen, — richten*: दृष्टिं पथिकः क्व याप-